# अध्याय--6

# उपसंहार

# उपसंहार

कहानी एक ऐसी विधा है जो हर काल में विभिन्न रूपों प्राप्त होती है। आदिकाल से मानवी अपने बचपन से ही कहानी सुनता आया है और आज भी हर बच्चा कहानी सुनने को लालायित रहता है। हलॉकि साहित्य में कहानी विधा के रूप में परिनिष्ठित होकर सामने आती है। हर काल के साहित्य में उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितयों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सांप्रत समय में कहानी साहित्य की लोकप्रिय विधा है। हलॉकि पाश्चात्य साहित्य में कभी-कभी शार्ट स्टोरी शीर्षक के अन्तर्गत लम्बी कहानियॉ भी लिखी जाती है। जैसे ओ.एनरी, गाय डी. मुॅपासॉ, एन्टन चेखोव इत्यादि कहानीकार पचास-पचास पन्नों में विस्तृत कहानियॉ भी देते हैं पर हमारे साहित्य में लघु स्वरूप ही कहानी नाम से जाना जाता है, जो एक बैठक में पढ़ी जा सके, जिसके पात्र मर्यादित हो, छोटे कालखण्ड को प्रस्तुत करती हो, पात्रानुरूप वातावरण हो और जिसमें विस्तृत वर्णन का सर्वथा अभाव हो। हमारे साहित्य में कहानी जीवन के किसी एक अंग या प्रधान घटना को प्रस्तुत करती है। जबकि उपन्यास का फलक विशाल होने के कारण उसमें कई समस्याओं का चित्रण होता है।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में भारतीय समाज की कुरीतियों का बखूबी प्रतिपादन किया है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में उस समय के वास्तविक भारत को अपने पात्रों एवं संवादों के माध्यम से सही मायने में चरितार्थ किया है। प्रेमचंदजी गांधीजी से प्रभावित थे, इसके साथ-साथ वे भारत के किसानों एवं दलितों पर हो रहे अतयाचार के खिलाफ थे। पूंजीपतियों द्वारा किये जाने वाले शोषण का खुले रूप से विरोध न कर पाने के कारण अपनी लेखनी को उन्होंने माध्यम बनाया। प्रेमचंद एक आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी लेखक थे, जिन्होंने श्रृंगार, भकित को छोड़कर भारत के लोगों की स्थिति की वास्तविकता को अपने साहित्य के माध्यम से दर्शाया है। वे पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने किसानों, मजदूरों, पीड़ितों, स्त्रियों, अछूतों, के जीवन की वास्तविकता को अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया।

एक तरफ हमारा देश आजादी की लड़ाई लड़ रहा था, ताकि हमें अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति मिल सके तो दूसरी तरफ एक ऐसा भारत भी था जो अंग्रेजों की गुलामी तो नहीं करता था लेकिन सामंतो, पूंजीपतियों एवं धार्मिक गुरुओं की न केवल गुलामी करता था बल्कि उनसे शोषित भी हो रहा था। शोषकवर्ग निचले वर्ग के लोगों को दीमक की तरह अन्दर से खोखला कर रहा था। यह हमारे देश की विडम्बना थी कि हमारे देश में शोषकवर्ग का प्रमाण ज्यादा था। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में

भारतीय समाज की हर कुनीति को दर्शाया है। प्रेमचंद की कहानियों का चयन करने पर मुझे पता चला कि उन्हें कहानी सम्राट क्यों कहा जाता है। प्रेमचंद की हर कहानी भारतीय समाज की किसी न किसी रूढ़िगत परंपरा का खंडन करती दिखाई देती है। मेरे शोधप्रबन्ध का विषय 'नवजागरण काल' पर आधारित है। नवजागरण काल में भी भारतीय समाज की कुरीतियों का खंडन-मंडन उस समय के समाज-सुधारकों ने किया था और प्रेमचंदजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से उन समाज सुधारकों का साथ दे रहे थे। इसीलिए तो प्रेमचंद को 'कलम का सिपाही' कहा जाता है। प्रेमचंदजी गरमदल और नरमदल के मध्यस्थी थे। गरमदल यानी सुभाषचन्द्र बोस की विचारधारा पर चलने वाले लोग और नरमदल यानी कि गांधीजी की विचारधारा पर चलने वाले लोग। इन दोनों के आजादी प्राप्त करने के मार्ग अलग अलग थे। प्रेमचंद ने इन दोनों के बीच का मध्यस्थ रास्ता अपनी लेखनी के माध्यम से निकाला। हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंदजी ने जो गौरव प्राप्त किया है, उसका महत्व अनिवर्चनीय हे। उनके कथा साहित्य में हमें सर्वप्रथम मानचरित्र की पहचान उपलब्ध होती है। प्रेमचंदजी के कथा साहित्य में मध्यमवर्ग की दयनीय स्थिति का हृदयस्पर्शी यथार्थोन्मुखी चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद पर पहले काफी काम हो चुका हो पर नवजागरण से संबंधित उनकी संपूर्ण कहानियों को मैनें **"नवजागरण काल के सन्दर्भ में प्रेमचंद की कहानियॉं: एक अनुशीलन"** विषय लेकर अपना शोधकार्य पूर्ण किया है। अपने इस शोधकार्य के लिए यथा संभव पूर्वाग्रह रहित तटस्थ समाजिक दृष्टिकोण अपनाया है।

प्रस्तुत शोधकार्य के अन्तर्गत मैंने निष्पक्ष विश्लेषण करने का प्रयास किया है। इस शोधप्रबन्ध में कुल छ: अध्याय है जो इस प्रकार हैं--

**अध्याय - 1 "प्रेमचंदजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"** का है। जिसके अन्तर्गत मैंने प्रेमचंदजी का जन्म, बचपन, शिक्षा, पारिवारिक जीवन, साहित्यक जीवन, उनके जीवन संघर्ष तथा उनके अन्तिम यात्रा तक के सफर को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। प्रेमचंद जैसे साहित्य सम्राट ने भी अपनी जिन्दगी में किस तरह से विषम परिस्थितियों का सामना किया है, उसे प्रस्तुत करने का यथासंभव प्रयास किया गया है। मैनें अपने शोधप्रबन्ध में प्रेमचंद तथा उनके परिजनों की छबियों को भी प्रस्तुत किया है। इसके उपरान्त प्रेमचंद का स्वयं का शैक्षणिक लगाव एवं उनकी कृतियॉं, जिसमें उर्दू उपन्यास, उर्दू लघुकथाएँ, उर्दू नाटक, उर्दू जीवनियॉं, उर्दू में अनूदित पुस्तकें, उर्दू लेख संग्रह तथा हिन्दी उपन्यासों की सूची, हिन्दी कहानी संग्रहों के नाम, हिन्दी लेख, हिन्दी नाटक, हिन्दी में अनूदित संग्रह, हिन्दी के पत्र संग्रह आदि की सूची दी है। अंत में प्रेमचंद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

**अध्याय-2 "नवजागरण और हिन्दी साहित्य''** का है। जिसको मैंने कई उप-अध्यायों में विभाजित किया है। जिसमें **प्रथम उप-अध्याय "नवजागरण का उद्‌भव और विकास''** का है। जिसके अन्तर्गत नवजागरण की उत्पत्ति विदेश में कैसे हुई और उसका क्या परिणाम आया यह दर्शाया गया है। साथ ही साथ भारत में नवजागरण किन कारणों से आया और इसका परिणाम आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षणिक और साहित्यिक क्षेत्र में क्या आया इसको दर्शाने का प्रयास किया गया है। मैनें विश्वसाहित्य पर आधारित कई पुस्तकों का चयन किया और बाद में इस उप अध्याय को सही रूप से न्याय देने का प्रयास किया। नवजागरण काल जिसे अंग्रेजी में रेनेसॉ कहा जाता है, वह मूलरूप में पश्चिम की देन है। उसका प्रभाव भारत में बड़े समय के अन्तराल के बाद आया। उसके आते-आते काफी समय बीत गया था। इस दौरान भारत अपनी रूढ़िगत मान्यताओं परम्पराओं तथा कुरीतियों के कारण अपनी समृद्धि संस्कृति का अवमूल्यन कर रहा था।

भारत में सवर्ण निम्नवर्ण को अपनी ही बनाई परंपराओं से यातनाएं देते थे। निमनवर्ग के अलावा भारतीय परंपराओं का सबसे ज्यादा भोग स्त्री बनी थी। लेकिन 1857 ई. स. के विप्लव के बाद तथा अंग्रेजों की मदद से राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधाराकों ने भारत की रूढ़िगत परंपराओं का खण्डन किया। मैंने अपने इस शोधप्रबन्ध में भारत में नवजागरण के आने का कारण तथा उसके परिणामों को विभिन्न प्रकार के बिंदुओं के आधीन प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया हैं

**द्वितीय उप-अध्याय-2 "पूर्ववर्ती साहित्य और नवजागरण''** के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य में आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल में रचना की गई साहित्यक कृतियों की चर्चा करते हुए उस समय के भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्थिति को दशार्या है।

उस समय के साहित्यकारों की भाषा शैली, रचनाएं रचनाओं की कथावस्तु, पात्र, चरित्र-चित्रण एवं रचनाकारों की विशेषताओं को दर्शाया गया है। इसके साथ ही साथ नवजागरण काल के आने के बाद साहित्य में आ रहे परिवर्तन को भी दर्शाया गया है। नवजागरण काल में पूर्ववर्ती साहित्य की तरह पद्य का प्रयोग ज्यादा न करते हुए गद्य विधा का प्रारंभ दिखाई देता है। तथा इस काल के लेखक राज्याश्रयी रचना न करके देशभक्ति एवं सामाजिक यर्थाथता को प्रस्तुत करने वाली रचनाओं का निरूपण करते थे। नवजगरण काल से ही हिन्दी साहित्य में विभिन्न विधाओं का प्रारंभ दिखाई देता है और यही आधुनिक काल को समृद्ध बनाने के लिए कारणभूत हैं। यहॉ मैने आधुनिक काल को समृद्ध

बनाने के लिए विभिन्न साहित्यक विधाओं की सूची दी है क्योंकि इसकी चर्चा आगे इस अध्याय के उप-अध्याय चार में की गई है।

**उप-अध्याय-तृतीय "लोकजागरण एवं नवजागरण में अन्तर''** के अन्तर्गत मैनें 14 वीं सदी के समय भारत में आए लोकजागरण तथा उससे होने वाले परिवर्तन को दर्शाने का प्रयत्न किया है। 14 वीं सदी के दौरान भारत में मुगल सल्तनत ने जिस तरह भारतीय संस्कृति, भारतीय मंदिरों, धर्मग्रंथों को तहस-नहस कर दिया था, उसकी चर्चा की है। साथ ही मुगलों ने धार्मिक यज्ञों, विधिओं आदि पर अपनी दमन नीति लागू कर रखी थी। भारतीय प्रजा भी मुगलों से त्रस्त हो चुकी थी और उन्हें भगवान पर से भी विश्वास हटता जा रहा था। भारतीयों की सोच इस हद तक आ चुकी थी कि मुगलों के ही भगवान सही है। इसी समय में भारतीयों को जगाने और उनका भगवान पर विश्वास बनाये रखने के लिए कई कवियों जैसे तुलसी, सूर, कबीर, जायसी आदि ने अपने साहित्य के माध्यम से निराश जनता में प्राण फूंकने का काम किया। कृष्णलीला, रामचरित्र एवं निर्गुण ईश्वर की परिकल्पना ने भारतीयों में श्रद्धा जगाई और वे इसी के आधार पर मुगलों का सामना कर पाए। लोगों में आई इस जागृति को लोकजागरण कहा गया। लोकजागरण तथा उससे होने वाले सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक कारणों एवं उसके प्रभाव से स्थापत्य कला, विभिन्न भाषाओं का जन्म और हिन्दी साहित्य में आए परिवर्तन को दर्शाने का नम्र प्रयास किया गया है। साथ ही साथ नवजागरण काल से विभिन्न क्षेत्रों में आए परिवर्तन एवं धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्य के आधार पर लोकजागरण और नवजागरण के अन्तर को भी स्पष्ट किया गया है।

**उप-अध्याय-4 "नवजागरण और विविध साहित्यक विधाएं''** में मैंने नवजागरण का संक्षिप्त परिचय देते हुए नवजागरण से उत्पन्न हुई विविध आधुनिक साहित्यिक विधाओं जैसे-नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध, रिपोतार्ज, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आलोचना, डायरी, पत्र-पत्रिकाएं आदि गद्य विधाओं के साथ-साथ विविध पद्य विधाओं जैसे महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक आदि की यथासंभव चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

**अध्याय-3 'प्रेमचंद और हिन्दी कहानी''** है। जिसे मैंने अध्याय-2 की भॉति विभिन्न उप-अध्यायों में विभाजित किया हैं इसमें कुल 4 उप-अध्याय है। जिसमें पहले **उप-अध्याय "पूर्व प्रेमचंद युग और हिन्दी कहानी''** के अन्तर्गत मैंने कहानी की उत्पत्ति एवं अर्थ समझाते हुए उसकी परिभाषा, स्वरूप और उसकी विकास यात्रा की चर्चा की है।

कहानी का आदि स्वरूप हमें संस्कृत साहित्य में पंचतंत्र और हितोपदेश में दिखाई देता है परंतु सही मायने में कहानी का विकास व परिपक्व रूप हमें नवजागरण काल में दिखाई देता है। शुरुआती दौर में जासूसी और ऐयारी कहानियॉ लिखी जाती थी लेकिन बाद में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, कुरीतियों पर आधारित एवं देश भक्ति पर आधारित कहानियों की रचना की जाने लगी। वास्तव में कहानी विधा को प्रेमचंदजी ने ही समृद्ध किया इसलिए उन्हें 'कहानी सम्राट' के नाम से भी जाना जाता है। मैने इस अध्याय में प्रेमचंद युग एवं हिन्दी साहित्य की प्रथम मानी जाने वाली ग्यारह कहानियों के शीर्षक, लेखक का नाम और प्रकाशन वर्ष भी दिया है। इस पर दिए गये विभिन्न साहित्यकारों के मत को भी मैने दर्शाने का प्रयत्न किया है। इन ग्यारह कहानियों को ही क्यों पहली कहानी कहा जाता है इसका जिक्र भी किया है। इसके अलावा कहानी के विभिन्न भेदों को भी दर्शाया गया है तथा साथ ही कहानी के विभिन्न भेदों की सूची भी चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत की गई है।

**दूसरे उप-अध्याय-"स्वधीनता आंदोलन और प्रेमचंद''** के अन्तर्गत मैंने अंग्रेजों के भारत आगमन के पूर्व और उसके बाद की भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्थिति को दर्शाने का प्रयत्न किया है। तथा भारत की जनता किस तरह मुगलों एवं अंग्रेजों से पीड़ित थी इसको भी यथायोग्य समझाने का प्रयत्न किया है। अंग्रेजों ने व्यापार के नाम पर जिस तरह से भारत को अपने हस्तक कर लिया तथा यहॉ की जनता की संस्कृति को, उनके गृह-उद्योगों को तथा व्यापार को भी किस तरह नष्ट किया है उसका वर्णन भी इसी अध्याय के अन्तर्गत किया गया है। 1857 के विप्लव ने भारतवासियों में स्वाभिमान जगा दिया और तभी से स्वाधीनता आन्दोलन की मुहिम शुरू हो गई। इस मुहिम को गांधीजी, सुभाषचंद बोस, भगतसिंह, सरदार वल्लभभाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं ने आगे बढ़ाया। इन नेताओं ने देश की आजादी के साथ-साथ भारतीय रूढ़ियों का भी खण्डन किया। साहित्य में भी इस राजनीतिक उथल-पुथल का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। प्रेमचंद गांधीजी से काफी प्रभावित थे। इसी कारण उन्होंने अपनी शिक्षक की नौकरी छोड़कर स्वाधीनता आन्दोलन में जुड़ तो गये लेकिन पारिवारिक समस्याओं के कारण उन्हें पुन: नौकरी करनी पड़ी। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में भारतीय समाज की स्वाधीनता से लेकर उनकी कूपमंडूकता तक को दर्शाया है।

**तीसरे उप-अध्याय-"आधुनिकता एवं हिन्दी कहानी और प्रेमचंद''** के अन्तर्गत मैंने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि नवजागरण की वजह से भारतीय समाज व्यवस्था, धार्मिकता तथा मनुष्य की सोच के परिणाम स्वरूप जिस आधुनिकता का जन्म हुआ तथा उसका साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा और इस आधुनिकता के दौर में हिन्दी कहानी का साहित्य किस चरम सीमा तक विकास पा सका है इसकी चर्चा

करने की कोशिश की है। अंग्रेजों ने रेल, तार, प्रेस आदि की शुरुआत अपने व्यापार हेतु की थी और इन्हीं संसाधनो ने भारतीयों में नवजागरण का बीज अंकुरित किया। लोग छुआछूत जैसी मान्यताओं से दूर होते गये। यहीं से आधुनिकता का प्रारम्भ माना जाता है। आधुनिकता ने मानवी की न केवल सोच बदली, लेकिन इस सोच का असर साहित्य में भी देखने को मिलती है। प्रेमचंद की कहानियॉ इसीलिए तो भारतीय समाज की हर कुपरंपरा का खंडन खुले रूप से करती हुई दिखाई देती है। आधुनिकता ने ही लोगों में इतनी शक्ति का संचार किया कि उन्होंने भारत में चल रही हर बुराई का सामना अपने विद्रोह से शुरू किया और साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से उनका साथ दिया। इस आधुनिकता की असर प्रेमचंद के साहित्य पर भी पूर्णरूपेण दिखाई देती है।

**अध्याय-4 "नवजागरण और प्रेमचंद''** का है। जिसे मैंने तीन उप-अध्यायों में विभक्त किया है। जिसमें **प्रथम उप-अध्याय "नवजागरण और प्रेमचंद की कहानियॉ''** में मैंने नवजागरण का सामान्य परिचय देते हुए उसका प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों जैसे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक आदि में किस प्रकार देखने को मिलता है उसकी संक्षिप्त चर्चा करने का प्रयत्न किया है। नवजागरण के आधार पर प्रेमचंद की कहानियों में हमें प्रेमचंदयुगीन यथार्थ भारत का दर्शन दिखाई देता है। प्रेमचंद की कहानियों में उस समय की विद्यमान कुरीतियों और परम्पराओं के साथ मुख्य समस्याएं जैसे दलितवर्ग, मध्यमवर्ग और नारियों पर हो अत्याचार का भी संक्षिप्त वर्णन किया गया।

**द्वितीय उप-अध्याय "नवजागरण से संबंधित प्रेमचंद की कहानियॉ''** में मैने प्रेमचंद की 301 कहानियों में से मात्र 38 ऐसी कहानियॉ अलग की जिसमें पूर्ण रूप से नवजागरण देखने को मिलता है। इन 38 कहानियों को मैंने 15 विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत रखा है। यथा

1. छुआछूत का विरोध करती कहानियॉ
2. विधवा विवाह का समर्थन करती कहानियॉ
3. अनमेल विवाह का विरोध करती कहानी
4. दहेज प्रथा का विरोध करती कहानियॉ
5. अपशकुन का विरोध करती कहानियॉ
6. प्रर्दाप्रथा का विरोध करती कहानी
7. संयुक्त परिवार की पक्षधर कहानी
8. परिवार नियोजन पर आधारित कहानियॉ
9. महाजनी सभ्यता का विरोध करती कहानियॉ

10. पूंजीपति प्रथा का विरोध करती कहानियॉं
11. स्वाभिमान परक कहनियॉं
12. राष्ट्रीय एकता पर आधारित कहानी
13. धर्म एवं साम्प्रदायिकता का विरोध करती कहानियॉं
14. नशाबन्दी से सम्बन्धित कहानियॉं
15. स्वदेशी वस्त्रों की पक्षधर कहानियॉं

इन सभी कहानियों में प्रेमचंदजी ने जहॉं पर नवजागरण को उजागर किया है, तथा विभिन्न लेखकों द्वारा उस पर दिए गये मत को भी यथासंभव मैनें प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

**तृतीय उप-अध्याय 'प्रेमचंद की कहानियों की भाषा शैली''** के अन्तर्गत मैंने प्रेमचंद की कहानियों में भाषा-शैली का प्रयोग किस रूप में हुआ है इसका संक्षिप्त परिचय दिया है। प्रेमचंदजी एक ऐसे पहले साहित्यकार हैं जिन्होंने आम् जनता की समझ में आए ऐसी हिन्दी का प्रयोग किया है। जिसे सामान्य से सामान्य व्यक्ति आराम से न केवल पढ़ सकता है पर प्रेमचंद जो कहना चाहते हैं, उसे बड़ी आसानी से समझ सकता है। प्रेमचंद ने अपनी भाषा में उच्च कोटि के बिम्ब, उपमा, एवं रूपकों का भी प्रयोग किया है। कहीं-कहीं पर कुछ उर्दू फारसी शब्दों का प्रयोग भी किया है, पर वह व्यक्ति आसानी से समझ सके ऐसे ही हैं। प्रेमचंदजी ने अपी सामान्य शुद्ध भाषा-शैली के माध्यम से ही भारतीय जन को प्रभावित किया और 'कहानी सम्राट' कहलाए।

**अध्याय-5 'प्रेमचंद की अन्य कहानियों का वर्गीकरण''** में मैंने प्रेमचंद की बाकी बची हुई कहानियों को 14 विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित किया है। जो इस प्रकार है।

1. सामाजिक एवे पारिवारिक कहानियॉं
2. नारी विमर्श पर आधारित कहानियॉं
3. दलित विमर्श और छुआछूत पर आधारित कहानियॉं
4. ऐतिहासिक कहानियॉं
5. राजनैतिक कहानियॉं
6. साम्प्रदायिक कहानियॉं
7. राष्ट्रप्रेम पर आधारित कहानियॉं
8. शैक्षणिक कहानियॉं
9. बाल-मनोवैज्ञानिक कहानियॉं

10. पशुओं पर आधारित कहानियॉ
11. अंधश्रद्धा पर आधारित कहानियॉ
12. आत्मकथात्मक कहानियॉ
13. आधुनिक साधनों से हो रहे नुकसान पर आधारित कहानियॉ
14. अन्य समस्याओं पर आधारित कहानियॉ

उपर्युक्त वर्गीकरण प्रेमचंद की कहानियों को पढ़ने के बाद किया गया है। उनकी कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं, जिनमें विभिन्न समस्याएं कुछ हद तक एक साथ दिखाई देती हैं उन्हें 'अन्य समस्याओं' पर आधारित कहानियों के अन्तर्गत रखा गया है।

**अध्याय-6. उपसंहार** के अन्तर्गत मैंने शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है।

यथाशक्ति यथामति किए गए शोधकार्य को मूर्त स्वरूप में विद्वतजनों के चरणों में रखते हुए अपार हर्ष का अनुभव तो कर रही हूँ, पर साथ में संकोच भी हो रहा है। प्रेमचंद जैसे कालजयी रचनाकार के सर्जन का मैं अल्पबुद्धि कैसे विवेचन कर सकती हूँ? किन्तु प्रभुकृपा और गुरुजनों के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से मैं ये भगीरथ कार्य पूर्ण कर पाई हूँ। साहित्याकाश में मेरे इस प्रयत्न को स्वीकार किया जाय यही अभ्यर्थना है। अस्तु

"सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखमाप्नुयात्।।"

"दश मन से, दस वचन से, बारह काया से,
बत्तीस दोषों में, मुझसे कोई दोष यदि लगा हो,
तो उन सभी को, मन, वचन, व काया से

## "मिच्छा मे दुक्कडम्"